

गुरुपूर्णिमा पर
आया पूज्य बापूजी
का संदेश
पृष्ठ ४

ऋषि प्रसाद

संत श्री आशारामजी आश्रम द्वारा प्रकाशित

मूल्य : ₹ ६ भाषा : हिन्दी
प्रकाशन दिनांक : १ अगस्त २०१९
वर्ष : २९ अंक : २ (निरंतर अंक : ३२०)
पृष्ठ संख्या : ३६ (आवरण पृष्ठ सहित)

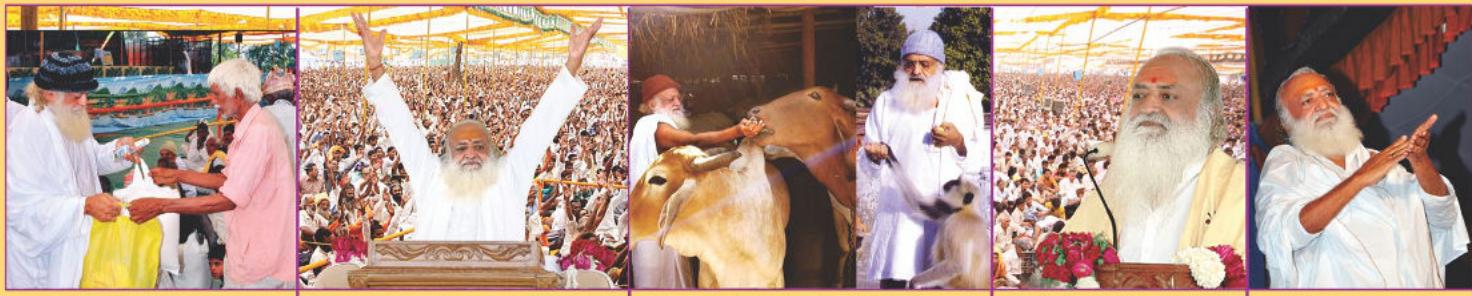
श्रीकृष्ण
जन्माष्टमी
२४ अगस्त



**भगवान् और भगवत्प्राप्त महापुरुष
सतत प्रतिकूलताएँ सहते हुए भी दूररों को
सदैव ज्ञान, प्रेम और आनंद ही बाँटते रहे हैं।**

माँ-बाप को हथकड़ियाँ पड़ी हैं, चारों तरफ दुःख के बादल मँडरा रहे हैं, परेशानियाँ-ही-परेशानियाँ हैं। उनके बीच मुस्कराते हुए अवतरित होकर श्रीकृष्ण दुनिया को दिखा रहे हैं कि चारों तरफ परेशानियाँ होते हुए भी तुम ऐसे ज्ञानस्वरूप चैतन्य आत्मा हो जिस पर परेशानियों का असर नहीं हो सकता।

- पूज्य संत श्री आशारामजी बापू



गरीबों को सहारा

तनावमुक्त जीवन की कला

प्राणिमात्र के हितैषी

सर्वदुःखहारी सत्संग

संकीर्तन रसधार

पूज्य बापूजी, श्री नारायण साँई व आश्रम पर अनर्गत आरोप लगानेवालों को जाँच आयोग का करारा तमाचा ९

गुरुपूर्णिमा निमित विभिन्न संत श्री आशारामजी आश्रमों में उमड़ा जनसैलाब

पृष्ठ पृष्ठ ३१ एवं देखें
आवरण पृष्ठ ४ व ३ भी

आलंदी, जि. पुणे

लखनऊ

करोलबाग-दिल्ली





मोक्षसुख बरसानेवाले सद्गुरु के ४ रूप



आचार्य मृत्युर्वरुणः सोम औषधयः पयः । जीमूता आसन्त्सत्वानस्तैरिदं स्वैरभूतम् ॥

‘सद्गुरु मृत्युरूप, वरुणरूप, सोमरूप, औषधिरूप, पयरूप और मेघरूप हुए हैं। उनके द्वारा यह मोक्षसुख लाया गया है अर्थात् उन्होंने ही साधक में वह नया आत्मबोध भर दिया है।’ (अथर्ववेदः कांड ११, सूक्त ७, मंत्र १४)

इस मंत्र में वेद भगवान ने सद्गुरु के ६ रूपों का वर्णन किया है : (१) **मृत्युरूप** : इच्छापूर्ति एवं शरीर की सुख-सुविधाओं का संग्रह ही जनसाधारण के जीवन का लक्ष्य होता है इसलिए प्रारम्भ में शिष्य शरीर और मन के स्तर पर जी रहा होता है। सद्गुरु शिष्य के शरीर और मन स्तर के जीवन को धीरे-धीरे मिटा के शिष्य को धर्म और ईश्वर स्तर का नूतन जीवन प्रदान करते हैं।

(२) **वरुणरूप** : जब शिष्य शरीर और मन स्तर के जीवन से ऊपर उठने में अपनी सहमति देता है तब वह सद्गुरु के दूसरे रूप का दर्शन कर पाता है। वैदिक क्रष्णि जिसे ‘वरुणपाश’ कहते थे उसीको स्मृतिकारों ने ‘जनेऊ’ कहा है। जनेऊ के ३ सूत्र ३ वरुणपाशों के प्रतीक हैं। वरुणरूप सद्गुरु शिष्य की सर्वांगीण उन्नति के लिए उसके मस्तिष्क (बुद्धि), हृदय और पेट को इन तीन पाशों से नियंत्रित करते हैं। कैसे ?

सद्गुरु शिष्य की बुद्धि में वेदांत-ज्ञानामृत की वर्षा करके उसमें स्थित संसार की सत्यता और शरीर में अहंबुद्धि के कुसंस्कारों को धो डालते हैं। सद्गुरु अपने अखंड व अनंत अद्वैत प्रेम की बाढ़ के प्रचंड प्रवाह में शिष्य के हृदय के द्वैत, राग-द्रेष, भय, भ्रम के भावों को जड़-मूल से उखाड़कर बहा ले जाते हैं। शिष्य ऐसे जिन संकीर्ण भावों के चंगुल से अपने को बचा नहीं पा रहा था, उनसे सद्गुरु हँसते-खेलते, प्रभु-प्रेमरस, अंतरात्म-रस पिलाते पार ले जाते हैं। शिष्य को आहार-विहार का युक्तियुक्त मध्यम मार्ग सिखाकर उसकी उदर-संबंधी अनियंत्रितताओं को बाँध लेते हैं और उसे स्वास्थ्य के मार्ग पर आगे बढ़ाते हैं। इस प्रकार सद्गुरु के इन तीन पाशों से शिष्य का जीवन आत्मोन्नति के लिए अत्यावश्यक संयम के मार्ग पर गतिशील होता है।

शिष्य जनेऊ के तीन सूत्रों को धारण करने के साथ जीवन में ये तीन संकल्प लेते हैं कि वे अपनी बुद्धि को वेदांत-ज्ञान से तथा हृदय को अद्वैत प्रेम से और पेट को हितकारी, अल्प एवं क्रतु-अनुकूल भोजन-प्रसाद से पोषित करेंगे।

ऋषि प्रसाद

हिन्दी, गुजराती, मराठी, ओडिया, तेलुगु, कन्नड, अंग्रेजी, सिंधी, सिंधी (देवनागरी) व बंगली भाषाओं में प्रकाशित
वर्ष : २९ अंक : २ मूल्य : ₹ ६
भाषा : हिन्दी निरंतर अंक : ३२०
प्रकाशन दिनांक : १ अगस्त २०१९
पृष्ठ संख्या : ३६ (आवरण पृष्ठ सहित)
श्रावण-भाद्रपद वि.सं. २०७६

स्वामी : संत श्री आशारामजी आश्रम
प्रकाशक : धर्मेश जगराम सिंह चौहान
मुद्रक : राधवेन्द्र सुभाषचन्द्र गादा
प्रकाशन स्थल : संत श्री आशारामजी आश्रम, मोटेरा, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३૮૦૦૦५ (गुजरात)
मुद्रण स्थल : हरि ३० मैन्युफैक्चरर्स, कुंजा मतरालियों, पौंडा साहिब, सिरमौर (हि.प्र.)-१७३०२५
सम्पादक : श्रीनिवास र. कुलकर्णी
सहसम्पादक : डॉ. प्रे. खो. मकवाणा
संरक्षक : श्री सुरेन्द्रनाथ भार्गव
पूर्व मुख्य न्यायाधीश, सिक्किम; पूर्व न्यायाधीश, राज. उच्च न्यायालय; पूर्व अध्यक्ष, मानवाधिकार आयोग, असम व मणिपुर
कृपया अपना सदस्यता शुल्क या अन्य किसी भी प्रकार की नकद राशि रजिस्टर्ड या साधारण डाक द्वारा न भेजें। इस माध्यम से कोई भी राशि गुम होने पर आश्रम की जिम्मेदारी नहीं रहेगी। अपनी राशि मनीऑर्डर या डिमांड ड्राफ्ट ('हरि ओम मैन्युफैक्चरर्स' (Hari Om Manufactureres) के नाम अहमदाबाद में देय) द्वारा ही भेजने की कृपा करें।

सम्पर्क पता : 'ऋषि प्रसाद', संत श्री आशारामजी आश्रम, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८૦૦૦५ (गुज.)

फोन : (०७९) २७५०५०१०-११, ३९८७७७८८

केवल 'ऋषि प्रसाद' पूछताछ हेतु : (०७९) ३९८७७७४२

79139877914  'Rishi Prasad' 

 ashramindia@ashram.org 

 www.ashram.org www.rishiprasad.org

सदस्यता शुल्क (डाक खर्च सहित) भारत में

अवधि	हिन्दी व अन्य	अंग्रेजी
वार्षिक	₹ ६५	₹ ७०
द्विवार्षिक	₹ १२०	₹ १३५
पंचवार्षिक	₹ २५०	₹ ३२५
आजीवन (१२ वर्ष)	₹ ६००	---

विदेशों में (सभी भाषाएँ)

अवधि	सार्क देश	अन्य देश
वार्षिक	₹ ६००	US \$ 20
द्विवार्षिक	₹ १२००	US \$ 40
पंचवार्षिक	₹ ३०००	US \$ 80

Opinions expressed in this publication are not necessarily of the editorial board. Subject to Ahmedabad Jurisdiction.

इस अंक में...

- ❖ मोक्षसुख बरसानेवाले सदगुरु के छ: रूप २
- ❖ गुरुपूर्णिमा पर आया पूज्य बापूजी का संदेश ४
- ❖ शास्त्र प्रसंग * लक्ष्मणजी की सबसे बढ़िया यात्रा ६
- ❖ ...तब भगवान में हमारी प्रीति होती है ७
- ❖ गीता अमृत * उनका योगक्षेम सर्वेश्वर स्वयं वहन करते हैं ८
- ❖ पूज्य बापूजी, श्री नारायण साँई व आश्रम पर अनर्गल आरोप ९
- ❖ लगानेवालों को जाँच आयोग का करारा तमाचा - धर्मेन्द्र गुप्ता १०
- ❖ पर्व मांगल्य * यह है श्रीकृष्णावतार का रहस्य ! ११
- ❖ * बुद्धि के देव की आराधना-उपासना का दिवस १२
- ❖ पूज्य बापूजी के जीवन-प्रसंग १४
- ❖ * गुरु-सान्निध्य याद आते ही हृदय गद्गद हो जाता है ! १५
- ❖ योग-वेदांत-सेवा * सेवा में दृष्टिकोण कैसा हो ? १७
- ❖ ऋषि ज्ञान प्रसाद * सत्साहित्य का लाभ उठायें... १७
- ❖ विद्यार्थी संस्कार १८
- ❖ * ...ताकि भारत का भविष्य जगदगुरु के ऊँचे सिंहासन पर रख दूँ १९
- ❖ * विद्यार्थी कैसा आहार करें ताकि उनका मन पढ़ाई में लगे ? २०
- ❖ * क्यों प्रोत्साहित किया जाय संस्कृत को ? २१
- ❖ * गुरुकृपा से पूरे भारत में पाया प्रथम स्थान ! - कृष्णाई राठोड़ २२
- ❖ तेजस्वी युवा * बात अच्छी न भी लगे लेकिन है १००% सत्य २०
- ❖ महिला उत्थान * महिलाओं के लिए पालनीय व्रत : ऋषि पंचमी २१
- ❖ तत्त्व दर्शन * ब्रह्मविचार की प्रक्रिया (क्षेत्र-क्षेत्रज्ञ विवेक) २३
- ❖ भक्त प्रह्लाद ने भगवान को कैसे जीता ? २४
- ❖ संतों की हितभरी अनुभव-वाणी २६
- ❖ जीवन जीने की कला * दस नाम-अपराधों से बचें २७
- ❖ श्राद्ध-महिमा * श्राद्धकर्म से पूर्वजों के साथ आपकी भी उन्नति होगी २८
- ❖ सेवा संजीवनी * गुरुकृपा साथ है तो क्या कठिनाई ! - मृदुल गुप्ता २९
- ❖ भगवान के रवरूप होते हैं संत ३०
- ❖ काव्य गुंजन * प्रभु ! मिल जाओ... - संत पथिकजी ३०
- ❖ संस्था समाचार * गुरुपूर्णिमा निमित्त... आश्रमों में उमड़ा जनसैलाब ३१
- ❖ * उत्साहपूर्वक मनायी गयी 'ऋषि प्रसाद जयंती'
- ❖ स्वास्थ्य संजीवनी * स्वास्थ्यवर्धक एवं पथ्यकर करेला ३२
- ❖ * मोटापे से राहत पाने के लिए
- ❖ * पित्त-संबंधी समस्याओं हेतु पूज्य बापूजी का स्वास्थ्य-प्रसाद ३३
- ❖ अनमोल कुंजियाँ * विघ्न-निवारण व मेधाशक्ति की वृद्धि हेतु ३४

विभिन्न चैनलों पर पूज्य बापूजी का सत्संग

॥ईश्वर॥

रोज सुबह ७-०० बजे



रोज रात्रि १०-०० बजे



www.ashram.org/live



रोज सुबह ७ व रात्रि ९ बजे

- * 'ईश्वर' टी.वी. चैनल टाटा स्कार्ड (चैनल नं. १०६८), डिश टी.वी. (चैनल नं. १०५७), विडियोकॉन (चैनल नं. ४८८) तथा जीटीपीएल, डेन, फास्टवे, हाथवे, इन डिजिटल आदि केबलों एवं 'Jio Tv' एंड्रोइड एप पर उपलब्ध है।
- * 'डिजियाना दिव्य ज्योति' चैनल मध्य प्रदेश में 'डिजियाना' केबल (चैनल नं. १०९) पर उपलब्ध है। * 'प्रार्थना' चैनल जम्मू में TechOne Cable पर उपलब्ध है।

Download Rishi Prasad Official, Rishi Darshan & Mangalmay Official Apps

...तब भगवान में हमारी प्रीति होती है

- पूज्य बापूजी

मेरे मित्रसंत लालजी महाराज ने मेरे को बताया कि एक मकान के बरामदे में बूढ़ा और बूढ़ी अपने पोते को खेल खिला रहे थे। मैं उधर से जाते-जाते खड़ा हो गया। बूढ़ी बोले जा रही थी : “मेरा बबलू! ओ मेरा राजा! ओ मेरा प्रभु! ओ मेरा प्यारा!...”

बच्चे को तो पता ही नहीं होता जितने अलंकारों से अथवा जिन भावों से उसको तुम बुलाते हो। लालजी महाराज दुकुर-दुकुर देखने लगे। तब उन बूढ़े-बूढ़ी ने कहा : “महाराज! क्या है? कहीं जाना है?”

महाराज : “कुछ नहीं, ऐसे ही... कहीं जाना नहीं है।”

“किसको मिलना है?”

“मिलना किसीको नहीं है। आप इस बच्चे को प्रेम कर रहे हो न, वह जरा देख रहा हूँ। तुम जो इसको बोल रहे हो, ‘राजा! मेरा हीरा! मेरा सोनू! मेरा बबलू!...’ इसको इतने अलंकार दे रहे हो, क्या इसको पता है?”

माई बच्चे को प्यार करती जा रही थी और बोली : “महाराज! मूल से भी ब्याज ज्यादा प्यारा होता है, बेटे से भी पौत्र ज्यादा प्यारा होता है।”

नम्रता की मूर्ति लालजी महाराज ने कहा : “आज्ञा दो तो मैं एक सवाल पूछूँ?”

“हाँ, पूछिये।”

“यह तुम्हारा पौत्र जब माँ के गर्भ में था तब भी तो आपको पता था कि हमारा पौत्र है, बालक है,

तो तब हुआ था ऐसा प्यार ?”

“माँ के गर्भ में भी हमारा पौत्र था लेकिन देखे बिना और नाम-रूप के बिना प्रीति कैसे होगी ?”

लालजी महाराज ने मुझसे कहा : “देखो, कैसा उसने जवाब दिया !”

ऐसे ही भगवान के नाम और रूप के बारे में सुने बिना, भगवान की महिमा सुने बिना भगवान में प्रीति कैसे जगेगी? जैसे बालक जब गर्भ से बाहर आता है तब दिखता है और तभी उससे प्रीति होती है, ऐसे ही संतों के हृदय से जब वाणी के द्वारा भगवान का नाम, रूप, गुण, स्वभाव, लीला, ऐश्वर्य आदि हमारे कानों तक आता है तब उस परमात्मा में प्रीति होती है। इसलिए बार-बार सत्संग सुनना चाहिए और भगवान की स्तुति करनी चाहिए।

(अवश्य पढ़ें आश्रम की समितियों के सेवाकेन्द्रों पर उपलब्ध पुस्तक ‘श्री नारायण स्तुति’)



ऋषि प्रसाद प्रश्नोत्तरी

निम्न प्रश्नों के उत्तर हेतु यह अंक ध्यान से पढ़ें।

(१) उपनिषदों के धन की पूजा अर्थात् आत्मज्ञानी महापुरुषों के चरणों में बैठकर की पूजा - यह गोवर्धन की पूजा है।

(२) उस परमात्मा के लिए किया हुआ कर्म ‘सत’ कहलाता है क्योंकि वह है।

(३) इन्द्रियगणों के जो स्वामी हैं उनको ‘.....’ कहा जाता है। (उत्तर अगले अंक में)

यह है श्रीकृष्णावतार का रहस्य !

- पूज्य बापूजी



श्रीकृष्ण जन्मोत्सव बड़ा रहस्यभरा महोत्सव है। समाज में पहले से लेकर आखिरी व्यक्ति का खयाल करके उसके उत्थान के लिए भिन्न-भिन्न आयामों का आविष्कार और स्वीकार करते हुए व्यक्ति की

आवश्यकताएँ व महत्ता को समझ के उसका विकास करनेवाला जो परात्पर ब्रह्म हर जगह मौजूद है... सगुण साकार होकर गुनगुनाता, गीत गाता, नाचता, खिलाता और खाता, अनेक अठखेलियाँ करता हुआ, जीव को अपनी महिमा में जगाता हुआ जो अवतार है, उसे श्रीकृष्णावतार कहते हैं।

ग्वाल-गोपों जैसी लीला का रहस्य

जब पृथ्वी पर अहंकारी और वासना से लिप्त लोगों के हाथ में सत्ताएँ आ गयीं... धर्मसत्ता स्वार्थी लोगों के हाथ में और राज्य-सत्ता प्रजा को निचोड़नेवाले लोगों के हाथ में आ गयी, तब प्रजा का वह आनंद, प्रजा का वह कृष्ण खो गया। प्रजा का वह प्रेम और मुक्त हारस्य, स्वातंत्र्य और 'स्व' के गीत गुंजाने की क्षमता मारी गयी। श्रीकृष्ण ने देखा कि लोगों को अपने से छोटे मानकर यदि उन्हें उन्नत किया जायेगा तो काम नहीं चलेगा और बड़े मानकर करेंगे तो अवज्ञा करेंगे, लाभ न ले सकेंगे... तो चलो, अपने बराबरी के मान के उनके साथ नाचो, गाओ, गुनगुनाओ ताकि वे कुछ ऊपर उठ जायें।

जेल में अवतरण का रहस्य

श्रीकृष्ण कोई राजकुमार अथवा राजाधिराज

बनकर नहीं रहे हैं। श्रीकृष्ण का जेल में अवतरण हुआ है। हजारों जन्मों से यह जीव कैद में पड़ा है। कैद में पड़े हुए व्यक्तियों से मिलना है तो तुम्हें भी कैद में आना पड़ेगा। जहाँ श्रीकृष्ण कैद में आकर कैदियों को छुड़ा रहे हैं वहीं वे ज्ञानियों के लिए उतने ही पूर्ण स्वतंत्र हैं।

श्रीकृष्ण में जिनकी जिस समय जैसी दृष्टि होती है उस समय उनको वे वैसे ही भासते हैं क्योंकि श्रीकृष्ण पूर्ण अवतार हैं। श्रीकृष्ण मित्रों को मित्र, चाणूर और मुष्टिक को पहलवान, कंस को काल, योगियों को योगेश्वर, भक्तों को भगवान, गोपियों को अपना प्यारा और वसुदेव को अपने बेटे दिखते हैं। वेदांत कहता है कि 'वही कृष्ण, वही चैतन्य कहीं बेटा बना है, कहीं प्यारा बना है, कहीं मृत्यु बना है तो कहीं जीवन बना है, कहीं अपना बना है तो कहीं पराया बना है।'

सनातन धर्म के ऋषियों ने, भारतीय प्रजा ने ३३ करोड़ देवता माने हैं। उनमें ब्रह्मा, विष्णु, महेश को मूर्धन्य, मुख्य माना है। सृष्टि की ३ सत्ताएँ हैं - उत्पत्ति (जन्म), स्थिति (जीवन) और प्रलय (मृत्यु)। इन सत्ताओं के अधिष्ठाता मुख्य ३ देव हैं - ब्रह्मा, विष्णु और महेश। सृष्टि की उत्पत्ति और मौत हम लोगों के हाथ में नहीं है। हम लोगों के हाथ में जीवन है तो उस जीवन में ही हमारे गीत गूँजें और उन गीतों को गुंजाने के लिए आदिनारायण विष्णुजी ने नन्हा-मुन्ना रूप धारण किया, उसी रूप का नाम है श्रीकृष्ण।

श्रीकृष्ण जिस वक्त जो उचित है वह करते हैं ऐसी बात नहीं, श्रीकृष्ण जो करते हैं वह उचित होता है क्योंकि जब अपना (व्यक्तिगत) स्वार्थ अलविदा हो जाता है तो उन ब्रह्मवेत्ताओं के द्वारा

बुद्धि के देव की आराधना-उपासना का दिवस - पूज्य बापूजी



(गणेश चतुर्थी : २ सितम्बर)

भगवान के ५ रूप सनातन धर्म के साधकों के आगे बड़े सुविख्यात हैं - सूर्य, शिव, विष्णु, शक्ति (जगदम्बा) और गणपतिजी। गणपतिजी की पूजा अपने देश में होती है और सनातन धर्म का प्रभाव जहाँ-जहाँ फैला है - बर्मा, चीन, जापान, बाली (इंडोनेशिया), श्रीलंका, नेपाल - वहाँ भी गणेश चतुर्थी का उत्सव धूमधाम से मनाया जाता है, पूजन किया जाता है।

शुभ कार्य में गणपतिजी का पूजन प्रथम होता है फिर वह चाहे विवाह हो, चाहे जन्म हो, चाहे मकान की नींव डालते हों, वास्तु-पूजन हो, चाहे दुकान या फैक्ट्री का उद्घाटन हो। कोई शुभ काम करते हैं तो प्रभावशाली श्रेष्ठ पुरुषों को सत्कार या प्रेम देने से, थोड़ा आदर करने से विघ्न-बाधाएँ दूर हो जाती हैं। ऐसे श्रेष्ठों-में-श्रेष्ठ प्रभावशाली गणपति भगवान हैं तो गणपतिजी का मन से चिंतन करके उनकी पूजा-प्रतिष्ठा करने से कार्य निर्विघ्नता से सम्पन्न होते हैं ऐसा कहा गया है।

अगर माँ बालक को बुद्धिमान, तेजस्वी देखना चाहती हो तो वह गणेश चौथ का उपवास करे, व्रत करे, जप करे।

गणानां पति इति गणपतिः। 'गण' माने इन्द्रियाँ, इन्द्रियगणों के जो स्वामी हैं उनको 'गणपति' कहा जाता है। ब्रह्मवैर्वत पुराण में आता

है कि न गणेशात्परो वशी। 'गणेशजी से बढ़कर कोई संयमी नहीं।'

बुद्धिमान लोग ऐसा भी अर्थ लगाते हैं कि गणपतिजी का वाहन छोटा है, मूषक (चूहा) है। बीच में शरीर मनुष्य का है और सिर बड़ा है। अर्थात् क्षुद्र जीव में से मानव होना चाहिए और मानव में से फिर विशाल मस्तिष्कवाले अर्थात् तत्त्ववेत्ता हो जाना चाहिए।

भूल से चन्द्र-दर्शन हो जाय तो...

भाद्रपद मास की शुक्ल चतुर्थी को चन्द्र-दर्शन से कलंक लगता है। इस वर्ष गणेश चतुर्थी (२ सितम्बर) के दिन चन्द्रास्त रात्रि १०:२६ बजे है। अतः इस समय तक चन्द्र-दर्शन न करें। यदि भूल से चन्द्रमा दिख जाय तो श्रीमद्भागवत के १०वें स्कंध के ५६-५७वें अध्याय में दी गयी 'स्यमंतक मणि की चोरी' की कथा का आदरपूर्वक पठन-श्रवण करें। इससे अच्छी तरह कुप्रभाव मिटता

है। तृतीया (१ सितम्बर) तथा पंचमी (३ सितम्बर) के चन्द्रमा का दर्शन कर लें, यह कलंक-निवारण में मददरूप है।

(अधिक जानकारी हेतु आश्रम की समितियों के सेवाकेन्द्रों पर उपलब्ध पुस्तक 'क्या करें, क्या न करें?' का पृष्ठ ४९ देखें।)



यदि युवावस्था में ही विवेक-वैराग्य जग जाय तो सब छोड़कर भगवान के लिए लग जाना चाहिए।

बात अच्छी न भी लगे लेकिन है १००% सत्य - पूज्य बापूजी

जन्म का फल यह है कि परमात्मा का ज्ञान पायें। 'नौकरी मिल गयी, प्रमोशन हो गया...' यह सब तुम्हें ठगने का व्यवहार है। परमात्मा के सिवाय किसी भी वस्तु, व्यक्ति में कहीं भी प्रीति की तो अंत में पश्चात्ताप के सिवाय कुछ हाथ नहीं लगेगा। सब धोखा देंगे, देखना। हमारी बात अभी तुमको अच्छी नहीं भी लगे लेकिन है सौ प्रतिशत सत्य। ईश्वर के सिवाय किसीमें भी प्रीति की तो अंत में रोना ही पड़ेगा।

व्यवहार तो जगत के पदार्थों से करो, प्रेम भगवान से करो। संसार प्रेम करने योग्य नहीं है, वस्तुएँ प्रेम करने योग्य नहीं हैं। प्रेम करने योग्य तो परमात्मा हैं। मोह रखो तो परमात्मा में, प्रीति करो तो परमात्मा से, लड़ाई करो तो परमात्मा से करो, उलाहना दो तो परमात्मा को दो। तुम्हारे लिए परमात्मा सर्वस्व होना चाहिए।

'भगवान को उलाहना दें ?'

हाँ, कम-से-कम इस बहाने भी तो उसकी याद रहेगी तो भी बेड़ा पार हो जायेगा। 'तू सबके हृदय में छुपा है और फिर प्रकट नहीं होता। मुझमें इतनी अकल नहीं, तब हे करुणानिधे ! तुम करुणा नहीं करोगे तो मेरा क्या होगा....

८४ लाख योनियों में भटकता रहूँगा। मनुष्य-जन्म की मति का दुरुपयोग करके दुर्गति में न गिरँ।

दीन दयाल बिरिदु संभारी ।

हरहु नाथ मम मूढ़ता भारी ॥

तू सत्-चित्-आनंद है और मेरा अंतरात्मा एवं विश्वेश्वर परमात्मा एक-का-एक ! तुम्हारी तरफ न जाकर असत्-जड़-दुःखरूप पंचविकारों की तरफ



अंधा आकर्षण लगा है नाथ ! पतंगे का अंधा आकर्षण उसे जलाकर मार देता है दीये में। भौंरे का कमल की सुगंध का आकर्षण उसे जानवरों के द्वारा मृत्यु के घाट उतार देता है। मछली का स्वाद का आकर्षण उसे कुंडे में फँसा देता है। हाथी का कामविकार का अंधा आकर्षण उसे गुलामी की जंजीरों में बाँध देता है। मृग का सुनने का आकर्षण उसे शिकारी का शिकार बना देता है।

**अलि पतंग मृग मीन गज,
एक एक रस आँच ।**

तुलसी तिनकी कौन गति, जिनको ब्यापे पाँच ॥

यह संत तुलसीदासजी का वचन सुनने-समझने के बाद भी पंचविकारों में आकर्षित होने की मूढ़ता लगी है।

**दीन दयाल बिरिदु संभारी ।
हरहु नाथ मम मूढ़ता भारी ॥**

सत्संग, ध्यान, आत्मसुख, परमात्म-ज्ञान का प्रसाद छोड़कर तुच्छ विकारों में अपने को तबाह कर रहे हैं। आत्मज्ञानात् परं ज्ञानं न विद्यते। आत्मलाभात् परं लाभं न विद्यते। आत्मसुखात् परं सुखं न विद्यते। -

ये शास्त्र व संत वचन तथा गीता-ज्ञान के होते हुए भी, उपनिषद् का अमृत होते हुए भी विषय-विकारों की तरफ अंधी दौड़ लगा रहे हैं। अशांति, विषाद, भय, चिंता, शोक की संसारी आग में तपते हुए भी... 'संसारतापे तप्तानां योगः परमौषधः ।' सुनते-समझते हुए भी... न कर्मयोग, न भक्तियोग, न ज्ञानयोग में चल पाते हैं। **दीन दयाल बिरिदु संभारी। हरहु नाथ मम मूढ़ता**



तेजरूपी युवा

भवत प्रह्लाद ने भगवान को कैसे जीता ?

वामन पुराण में एक रहस्यमय एवं ज्ञानवर्धक कथा आती है :

एक बार प्रह्लाद नैमिषारण्य में गये। वहाँ उन्होंने सरस्वती नदी के पास धनुष-बाण लिये तपस्यारत दो मुनियों - नर व नारायण को देखा और दम्भयुक्त समझकर कहा : “आप दोनों यह धर्मविनाशक दम्भपूर्ण कार्य क्यों कर रहे हैं? कहाँ तो आपकी यह तपस्या और जटाभार, कहाँ ये दोनों श्रेष्ठ अस्त्र ?”



मुनि नर ने कहा : “दैत्येश्वर! तुम इसकी चिंता क्यों कर रहे हो? सामर्थ्य रहने पर कोई भी व्यक्ति जो कर्म करता है, उसे वही शोभा देता है। हमने पर्याप्त

शक्ति प्राप्त कर ली है। हम दोनों से कोई भी युद्ध में नहीं कर सकता।”

प्रह्लाद ने कुद्ध होकर प्रतिज्ञा की : ‘मैं युद्ध में जिस किसी भी प्रकार आप दोनों को जीतूँगा।’

प्रह्लाद ने पहले नर के साथ घोर युद्ध किया। जब उन्होंने ब्रह्मास्त्र चलाया तब ऋषि नर ने माहेश्वरास्त्र का प्रयोग किया। वे दोनों अस्त्र एक दूसरे से टक्कर खाकर गिर गये। यह देख प्रह्लाद गदा लेकर रथ से कूद पड़े। तब ऋषि नारायण ने स्वयं युद्ध करने की इच्छा से नर को पीछे हटा दिया। नारायण और दैत्यराज प्रह्लाद का घमासान युद्ध होने लगा। संध्या के समय युद्ध-विराम हो जाता एवं दूसरे दिन पुनः युद्ध शुरू होता।

दीर्घकाल तक युद्ध करने पर भी प्रह्लाद मुनि नारायण को जीत न पाये तब इसका कारण जानने

वे वैकुंठ गये।

वहाँ भगवान विष्णु बोले : “प्रह्लाद! नारायण तुम्हारे द्वारा दुर्जेय हैं। वे परम ज्ञानी हैं। वे सभी देवताओं एवं असुरों से भी युद्ध में नहीं जीते जा सकते।”

प्रह्लाद अपनी प्रतिज्ञा को अब पूरा होना असम्भव जानकर प्राण-त्याग करने के लिए प्राणों को सहस्रार चक्र में स्थिर करके सनातन ब्रह्म की स्तुति करने लगे। तब भगवान विष्णु ने कहा : “तुम उन्हें भक्ति से जीत सकोगे, युद्ध से कदापि नहीं। वस्तुतः नारायण रूप में वहाँ मैं ही हूँ। मैं ही जगत की भलाई की इच्छा से धर्म-प्रवर्तन के लिए उस रूप में तप कर रहा हूँ। इसलिए यदि तुम विजय चाहते हो तो मेरे उस रूप की आराधना करो।”



हिरण्याक्ष के पुत्र अंधक को राज्य देकर प्रह्लाद बदरिकाश्रम पहुँचे और मुनि नारायण व नर के चरणों में प्रणाम किया।

मुनि नारायण : “प्रह्लाद! मुझे बिना जीते ही अब तुम क्यों प्रणाम कर रहे हो?”

प्रह्लाद : “आपको भला कौन जीत सकता है? विद्वान पुरुष आपकी ही पूजा करते हैं। वेदज्ञ आपके नाम का जप करते हैं तथा याज्ञिकजन आपका यजन करते हैं। आप ब्रह्मा, शिव, इन्द्र, अग्नि, यम, वरुण और वायु हैं। आप सूर्य, चन्द्र तथा स्थावर (स्थिर) और जंगम (चलने-फिरनेवाले प्राणी, जंतु) के आदि हैं। पृथ्वी, अग्नि, आकाश और जल आप ही हैं। सहस्रों रूपों से आपने समस्त जगत को व्याप्त किया है। जगदगुरो! आप भक्ति से ही संतुष्ट हो सकते हैं।”

त्रिफला चूर्ण

यह आँखों की सूजन, लालिमा, नजर की कमजोरी, कब्ज, मधुमेह (diabetes), मूत्ररोग, त्वचा-विकार, जीर्णज्वर व पीलिया में लाभदायक है।



गौ थुब्बि सुगंध (फिनायल)

दो प्रकारों
में उपलब्ध

आयुर्वेद व धर्मशास्त्रों में वर्णित, पुरातन काल से आरोग्यता, पवित्रता, स्वच्छता हेतु प्रयुक्त होनेवाला गोमूत्र अब एक विशेष अंदाज में ! * गोमूत्र, नीम-सत्त्व, देवदार तेल, वानस्पतिक सुगंधियाँ एवं अन्य सुरक्षित कीटाणुनाशकों से निर्मित । * रोगाणुनाशक एवं सफाई के साथ सात्त्विक वातावरण के निर्माण में उपयोगी । * गौ-सेवा के साथ-साथ आध्यात्मिक वातावरण का लाभ देने में मददगार ।



हृदय सुधा (सिरप)

यह हृदय की तरफ जानेवाली तमाम रक्तवाहिनियों को खोलने में मदद करता है । यदि आप हृदयरोग से पीड़ित हैं और डॉक्टर ने बायपास सर्जरी करवाने के लिए कहा है तो उससे पहले इस सिरप का प्रयोग अवश्य करें ।



पलाश शरबत

जलन, तृष्णा
(प्यास) आदि में
लाभदायक, गर्भी
सहने की शक्ति
बढ़ानेवाला ।



लीची पेय

कमजोरी को दूर
व शरीर को पुष्ट
करनेवाला तथा
पाचनक्रिया को
मजबूत बनानेवाला ।



मैंगो ओज

सप्तधातु
वर्धक व
उत्तम
हृदय-पोषक ।
wt. = Net weight

उपरोक्त सामग्री संत श्री आशारामजी आश्रम की समितियों के सेवाकेन्द्रों से प्राप्त कर सकते हैं । रजिस्टर्ड पोस्ट से मँगवाने हेतु सम्पर्क करें : (०७९) ३९८७७३०, ई-मेल : contact@ashramestore.com अन्य उत्पादों व सभीके विस्तृत लाभ आदि की जानकारी के लिए एवं घर बैठे सामग्री प्राप्त करने हेतु गूगल प्ले स्टोर से डाउनलोड करें : "Ashram eStore" App या विजिट करें : www.ashramestore.com

त्यासपूर्णिमा पर किया गुरुपूजन (आवरण पृष्ठ ४ से आगे की तरवीरें)



ख्यारापूर्णिमा पर श्रद्धा, प्रीति, कृतज्ञता, अहोभाव से भेरे अगणित हृदय पहुँचे गुरुद्वार, किया गुरुपूजन



RNI No. 48873/91

RNP. No. GAMC 1132/2018-20
(Issued by SSPOs Ahd, valid upto 31-12-2020)
Licence to Post Without Pre-payment.

WPP No. 08/18-20
(Issued by CPMG UK. valid upto 31-12-2020)
Posting at Dehradun G.P.O. between
1st to 17th of every month.
Date of Publication: 1st Aug 2019

परम कल्याणकर्त्री 'ऋषि प्रसाद' सिर-आँखों पर रखकर मनायी जयंती



स्थानाभाव के कारण सभी तस्वीरें नहीं दे पा रहे हैं। अन्य अनेक तस्वीरों हेतु वेबसाइट www.ashram.org/sewa देखें।

दीपावली के पावन पर्व पर अहमदाबाद आश्रम के पवित्र आध्यात्मिक वातावरण में विद्यार्थी अनुष्ठान शिविर २७ अक्टूबर से २ नवम्बर

“विद्यार्थियों को गुरु-आश्रम में अनुष्ठान हेतु आने का जो अवसर मिलता है,
यह बहुत भारी कल्याणकारी अवसर है।” - पूज्य बापूजी

सम्पर्क : बाल संस्कार विभाग, अहमदाबाद आश्रम दूरभाष : (०૭૯) ३९८७७७४९/५०/५१

* बड़े साधक भी अनुष्ठान-शिविर का लाभ ले सकते हैं। * ट्रेन के आरक्षण शुरू हो चुके हैं, जल्द ही टिकट बुक करायें।

